Insect-Pests and Diseases on Forest Tree Species and Their Management: A training programme for the Field Functionaries of State Forest Department of Himachal Pradesh

A training programme on "**Insect-Pests and Diseases on Forest Tree Species and Their Management**" was organised by Himalayan Forest Research Institute on 18th March, 2019 in the Conference Hall of the institute. The training was attended by 25 trainees of Forest Training Institute, Chail, District Solan, Himachal Pradesh. The objective of the training was to appraise the trainees about the important insect-pests and disease of forestry species and their management.

Sh. Subhas Chander, Scientist- D, Coordinator of the training programme welcomed the participants and briefed them about the outline of the training programme. **Dr. V.P. Tewari**, Director, Himalayan Forest Research Institute, Shimla, inaugurated the training programme. In his inaugural address, Dr. Tewari said that insects constitute the largest group of organisms on this planet, which includes beneficial as well harmful species. He was of opinion that for

effective pest management strategy, a sound knowledge of identification of insects is very important. He further added that this training programme will be helpful to the participants to recognise diseases and insect-pests attack on forest tree species. He also advised the participants that if they observe any incident of insect-pest attack in forests, they can contact HFRI, Shimla for development of suitable management strategy. **Dr. Tewari** encouraged the trainees to actively participate in the discussion to make the training programme fruitful.

During the technical session, **Dr. Vineet Jishtu**, Scientist- D, HFRI, delivered a talk on plant species occurring in various ecological zones of Himachal Pradesh. **Dr. Sandeep Sharma**, **Scientist- G**, HFRI, discussed about nursery techniques of important conifers and broadleaved trees of Himachal Pradesh and explained about raising of quality planting stock, polyhouse technique, composting, vermi-composting, potting media etc. for modernising forest nurseries in Himachal Pradesh.

Dr. S.P. Bhardwaj, Ex- Vice Chancellor, Manav Bharti University, Solan, Himachal Pradesh highlighted the beneficial and harmful insect of forest ecosystem and discussed management of key insect-pests. He also advised the participants to conserve the diversity of beneficial insects and to follow eco-friendly strategies for the management of harmful pests. In the afternoon session, **Dr. R.K. Verma**, Scientist- G, HFRI, delivered a talk on Eco-restoration of degraded areas and emphasized on plantation and restoration of different types of wastelands of Himachal Pradesh. He also explained about potting mixture and plant species suitable for eco-restoration of lime

stone mined out areas and other types of wastelands. **Dr. Ashwani Tapwal**, Scientist- E, HFRI, highlighted the important diseases of conifers and discussed their eco-friendly management. **Sh. Subhas Chander,** Scientist-D discussed about the outbreak of white grub and termites in nurseries, plantations and their management and deliberated broadly upon eco-friendly management of insect-pests with special reference to forestry species. During the laboratory visit, **Mrs. Savita Kumari Banyal**, ACTO, briefed participants about various ongoing research activities of Forest Protection Laboratory of the institute and also made the participants familiar with specimens of insects-pests and diseases.

During plenary session of the training programme, the issues and concerns of the participants were addressed by the Scientists and director of the institute. **Dr. Rajesh Sharma**, Group Coordinator (Research) in his concluding remarks highlighted the importance of the training programmes conducted by the institute and emphasized upon the management of insect-pests and disease in the forests. In the end, **Dr. V.P. Tewari**, Director, HFRI, Shimla, distributed the certificates of participation to the trainees. He also appreciated the participants for showing keen interest in the training programme and assured to include their suggestions in the future training programmes. The training programme ended with vote of thanks by Mrs. Savita Kumari Banyal.

Media Coverage

वनों में कीट पतंगों व बीमारियों के प्रबंधन की दी जानकारी

एच.एफ.आर.आई. में कार्यशाला का किया गया आयोजन

शिमला, 18 मार्च (ब्यूरो): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी (एच.एफ.आर.आई.) में वनों के कीट पतंग एवं रोग तथा उनका प्रबंधन विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इसमें वन प्रशिक्षण संस्थान चायल के 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस दौरान चीड़ के वनों में कीट पतंगों और बीमारियों के प्रबंधन को लेकर जानकारी दी गई। एच.एफ.आर.आई. के निदेशक डा. वी.पी. तिवारी ने कहा कि हिमाचल में विभिन्न प्रकार के वन पाए जाते हैं और जलवायु परिवर्तन के कारण वृक्षों में आमतौर पर कीट व रोगों के प्रकोप की संभावना बनी रहती है। समय रहते वनों में कीट पतंगों एवं बीमारियों की पहचान करने से भविष्य में उनके द्वारा होने वाले प्रकोपों से बचा जा सकता है। उन्होंने प्रतिभागियों को कीट पतंगों एवं बीमारियों के पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन की सलाह दी। एक निजी विश्वविद्यालय के पूर्व उप कुलपति डा. एस.पी. भारद्वाज ने हिमाचल के वनों में कीट पतंगों की समस्याओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा की और उनके प्रबंधन की रणनीति पर सुझाव दिए। डा. अवधनी तपवाल वैज्ञानिक ने शंकुधारी वनों के महत्वपूर्ण कवक रोगों पर प्रकाश डाला और उनके पर्यावरण हितैषी प्रबंधन पर जोर दिया।

*शिमला : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में आयोजित कार्यशाला के दौरान संयुक्त चित्र में ** प्रतिभागी।* (वि.स.)

पंजाब केसरी ई-पेपर Tue, 19 March 2019 https://epaper.punjabkesari.in/c/37739561

Panjab Kaseri: 19/03/2019

वन कर्मियों को वनों के कीट-पतंगों की दी जानकारी

शिमला। *हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी, शिमला के सभागार में 'वनों के कीट पंतग एवं रोग और उनका प्रबंधन' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सोमवार को हुआ। कार्यक्रम में हिमाचल वन विभाग से 25 प्रतिभागी सम्मिलित हुए जो वर्तमान में वन प्रशिक्षण संस्थान, चायल के प्रशिक्षणार्थी हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्राथमिकता चीड़ के वनों में कीट पंतगों और बीमारियों की बढ़ती घटनाओं पर प्रकाश डालना और इनके प्रबंधन पर जागरूकता पर बल देना था। इस कार्यक्रम के आरंभ में प्रशिक्षण के समन्वयक सुभाष चंद्र, वैज्ञानिक ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया और संक्षिप्त रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण दिया। तत्पश्चात डॉ. वीपी तिवारी, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने प्रदेश में विभिन्न प्रकार के वन पाए जाते हैं और जलवायु परिवर्तन के कारण वक्षों में आमतौर पर कीट व रोगों के बारे जानकारी दी। तकनीकी सत्र में डा. एसपी भारद्वाज, पूर्व उप-कुलपति, मानव भारती विश्वविधालय, सोलन ने हिमाचल प्रदेश के वनों में कीट पतगों की समस्याओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा की और उन के प्रबधन की रणनीति पर सुझाव दिए।*

Himachal Dastak: 19/03/2019

पंथाघाटी स्थित हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के सभागार में आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में पहुंचे कर्मचारी। अमर उजाला

विशेषज्ञों ने दिए कीट-पतंगों से पेड़ों को बचाने के टिप्स

शिमला। पंथाघाटी स्थित हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के सभागार में सोमवार को वनों के कीट-पतंग एवं रोग और उनका प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ। इसमें हिमाचल वन विभाग से 25 प्रतिभागी शामिल हुए।

ये वर्तमान में वन प्रशिक्षण संस्थान चायल के प्रशिक्षणार्थी हैं। उन्हें चीड़ के वनों में कीट पतंगों और बीमारियों की बढ़ती घटनाओं व इनके प्रबंधन की जानकारी दी गई। संस्थान के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने कहा कि यदि समय रहते वनों में कीट पतंगों एवं बीमारियों की पहचान करने से भविष्य में उनकी ओर से होने वाले प्रकोपों से बचा जा सकता है। उन्होंने प्रतिभागियों को कीट पतंगों एवं बीमारियों के पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन की सलाह दी। मानव भारती विश्वविद्यालय के पूर्व उप कुलपति डॉ. एसपी भारद्वाज ने प्रदेश के वनों में कीट की समस्याओं के प्रबंधन की रणनीति पर सुझाव दिए। इसके बाद कई अन्य विशेषज्ञों ने भी विचार रखे। तिवारी ने कहा कि अगर कर्मचारियों को पेड़ों में कीट दिखते हैं तो वह संस्थान से संपर्क कर सकते हैं। ब्यूरो

Amar Ujala: 19/03/2019

दैनिक भास्कर

रिसर्च • पेड़ों को खोखला करने के साथ इन्हें सुखाकर गिरा भी रहे, एचएफआरआई में फॉरेस्ट गार्ड के सेमिनार में इन्हें बचाने पर हुआ मंथन

आग ही नहीं बल्कि कीट-पतंगे भी खत्म कर रहे चीड़ के पेड़

सोमदत्त शर्मा | शिमला

प्रदेश में चीड़ के जंगलों को न सिर्फ हर साल लगने वाली आग खत्म कर रही है बल्कि इन जंगलों में ही पाए जाने वाले कई तरह के कीट पतंगे भी धीरे-धीरे चीड़ के पेड़ों को गिराने का काम करते हैं। आमतौर चीड़ के जंगलों में पाए जाने वाले कीट पतंगे बोरर, डिफोगेट्स और बीटल चीड़ के पेड़ों को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

वैज्ञानिकों की रिसर्च में सामने आया है कि यह न केवल पेड़ों को खोखला कर रहे हैं बल्कि उन्हें सुखाने का काम भी कर रहे हैं। यह खुलासा एचएफआरआई शिमला में फॉरेस्ट गार्ड के लिए हुए एक दिवसीय सेमिनार में वैज्ञानिकों ने किया। उन्होंने फॉरेस्ट गार्ड को हिदायत भी दी कि इस तरह के कीट पतंगों को यदि चीड़ के जंगलों में देखें तो इसकी सूचना तुरंत एचएफआरआई में वैज्ञानिकों को दें। इस प्रशिक्षण में हिमाचल वन विभाग से 25 प्रतिभागी शामिल हुए। कार्यक्रम की प्राथमिकता चीड़ के वनों में कीट पंतगों और बीमारियों की बढ़ती घटनाओं के बारे में जागरूक करता था।

• ये कीट ऐसे पहुंचाते हैं पेड़ को नुकसान

• बीटल

बीटल चीड़ की जड़ों में रहता और इन्हें खोखला करने का कार्य करता है। चीड़ की जड़ें सूखने पर कुछ ही समय में पेड़ गिर जाता है। इससे चीड़ को सबसे अधिक नुकसान होता है।

• बोरर

बोरर चीड़ के पेड़ के तनों में रहता है। यह तनों में छेद कर देता है। पेड़ को अंदर से खोखला करता रहता है और पेड़ के अंदर का रस चूसता रहता है। इससे पेड़ की लाइफ कम हो जाती है।

• डिफोगेट्स

डिफोगेट्स यह चीड़ की हरी पत्तियों में चिपक जाता है। पत्तियों का रस चूसता रहता है। थोड़े समय में पत्तियां सूखने लगती है। उसके बाद यह पेड़ों से झड़ जाती है।

• पेड़ों को बीमारियों से बचाना लक्ष्य एचएफआरआई के डॉयरेक्टर डॉ वीपी तिवारी ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में विभिन्न प्रकार के वन पाए जाते है और जलवायु परिवर्तन के कारण वृक्षों में आमतौर पर कीट और रोगों के प्रकोप की संभावना बनी रहती है, यदि समय रहते वनों में कीट पतंगों एवं बीमारियों की पहचान करने से भविष्य में उनके द्वारा होने वाले प्रकोपों से बचा जा सकता है। कार्यक्रम के आरंभ में प्रशिक्षण के समन्वयक और वैज्ञानिक सुभाष चंद्र ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया और संक्षिप्त रूप से प्रशिक्षण का विवरण दिया।

• पेड़ों में दिखे कीट या रोग तो एचएफआरआई को बताएं वैज्ञानिको ने प्रशिक्षणार्थीयों से आग्रह किया कि यदि उनके वन क्षेत्र में कभी भी पेड़ों पर कीट या रोग के लक्षण दिखें तो एचएफआरआई से संपर्क करें। संस्थान तत्काल उनकी समस्या के निदान करने के लिए तत्पर है। उन्होंने का कि यदि वन रक्षक पेड़ो की बीमारियों और कीट पतंगों के बारे में सही जानकारी रखेंगे तो पेड़ों में लगने वाली कई तरह की बीमारियों से उन्हें बचाया जा सकेगा। तकनीकी सत्र में पूर्व वीसी एमबीयू सोलन डॉ. एसपी भारद्वाजने प्रदेश के वनों में कीट पंतगों की समस्याओं पर विस्तार पूर्वक चर्चा की और उन के प्रबंधन की रणनीति पर सुझाव दिए।

• कवक रोगों की भी दी जानकारी वैज्ञानिक डॉ अश्वनी तपवाल शंकुधारी वनों के महत्वपूर्ण कवक रोगों के बारे में जानकारी दी और उनके पर्यावरण हितैषी प्रबंधन पर जोर दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि रोगों के प्रबंधन के लिए एकीकृत दृष्टिकोण विकसित करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपायों को साथ जोड़ना चाहिए। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों संस्थान वन संरक्षण की प्रयोगशाला का दौरा भी किया गया, जहां प्रतिभागियों को कृत्रिम माईकोरइजा तैयार करने की विधि एवं वनों के मुख्य कीट पंतगों एवं बीमारियों के लक्षणों पर विस्तार से जानकारी दी।

Danik Bhaskar: 19/03/2019

पेड़ों पर कीट या रोग दिखे तो एचएफआरआइ को बताएं

राज्य ब्यूरो, शिमला : राजधानी शिमला के पंथाघाटी में स्थित हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (एचएफआरआइ) में वनों के कीट पतंगों, रोगों और इनके प्रबंधन पर एक दिवसीय कार्यशाला हुई। इसमें वन विभाग के 25 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया जो वन प्रशिक्षण संस्थान चायल के प्रशिक्षार्थी हैं।

कार्यशाला में एचएफआरआइ के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने कहा कि हिमाचल में विभिन्न प्रकार के वन हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण वृक्षों में आमतौर पर कीटों व रोगों के प्रकोप की आशंका रहती है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आग्रह किया कि यदि उनके क्षेत्र में पेड़ों पर कीट या रोग के लक्षण दिखें तो एचएफआरआइ से संपर्क करें। संस्थान तत्काल समस्या का निदान करेगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य चीड़ के वनों में कीट पतंगों और बीमारियों की बढ़ती घटनाओं पर प्रकाश डालना और इनके प्रबंधन पर जागरूक करना था।

Jansata: 19/03/2019